श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

शत्रुंजय अकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१

सम्यग्ज्ञान विशारद

अभ्यासक्रम क्रं. : 10

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆ Answer

ऐनरोलमेन्ट नंबर 16

शहर ~~[illegible]~~ S

विद्यार्थी का नाम

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	कर्मरहित
(२)	बाहुबली
(३)	शुध्द वाणी
(४)	असंख्यात
(५)	जीतेंद्रिय
(६)	उपसर्ग
(७)	राग
(८)	ज्ञानावरणीय
(९)	कालसाथे
(१०)	आत्मा के स्वरुप
(११)	सुर्य
(१२)	दुर्लभता
(१३)	आम्नायपूर्वक
(१४)	महाजनो
(१५)	आत्मप्रदेश
(१६)	धर्मलाभ
(१७)	पूर्व प्रयोग
(१८)	गुलामी
(१९)	आहार
(२०)	कर्म गुरुता

प्रश्न-२ एक ही शब्द मे

(१)	सुभटो	(५)	प्रथ्वी
(२)	विशालस्तुप	(६)	पाते है
(३)	एरंड फल	(७)	भ्रमर
(४)	विघ्नरुपी बेले	(८)	आकाश
(५)	अणाहारी पद	(९)	भवनपति
(६)	तीन योगों को	(१०)	राज्य
(७)	कर्मसत्ता	(११)	अच्छीतरह स्तवित
(८)	इषद् प्राग्भारा	(१२)	घटना
(९)	लिलाधर	(१३)	बेले
(१०)	पाटण	(१४)	हाथी
(११)	वनस्पतीकाय	(१५)	ओस
(१२)	महाप्राणायाम	(१६)	उपर कहे अनुसार
(१३)	अढबुरगी	(१७)	शिष्य
(१४)	स्थुलीभद्र	(१८)	पर्याप्त मनुष्य
(१५)	आयुष्यकर्म	(१९)	प्राप्त
		(२०)	स्फुलिंग

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	बादर अग्निकाय
(२)	जल
(३)	कुभार
(४)	बिजली

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	५	(६)	९
(२)	१०	(७)	३
(३)	१	(८)	७
(४)	२	(९)	४
(५)	८	(१०)	६

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	१६४२
(२)	४५०
(३)	७
(४)	४
(५)	२४
(६)	८
(७)	[illegible] १८
(८)	[illegible] ८
(९)	१६
(१०)	९८

प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर	
(१)	✓	(१)	१०
(२)	×	(२)	१५
(३)	×	(३)	७
(४)	~~✓~~ ×	(४)	१८
(५)	✓	(५)	११
(६)	✓	(६)	५
(७)	×	(७)	११
(८)	✓	(८)	५
(९)	✓	(९)	१८
(१०)	×	(१०)	२१

प्रश्न-१ मिल हुए गुण	प्रश्न-२ मिल हुए गुण	प्रश्न-३ मिल हुए गुण	प्रश्न-४ मिल हुए गुण	प्रश्न-५ मिल हुए गुण	प्रश्न-६ मिल हुए गुण	प्रश्न-७ मिल हुए गुण	प्रश्न-८ मिल हुए गुण	कुल गुण

रीमार्क ______________________ जांचनेवाले की सही ______________________

प्रश्न - ८

१. श्रुत मद :- पूर्व भव की आराधना से बुद्धि अच्छी मिले, बहुत पढ सके पर उसे प्राप्त किये हुऐ ज्ञान को अगर पचा नहीं सके तो उसे श्रुत-ज्ञान का भी गर्व आ जाय, अभिमान आ जाय वो श्रुतमद कहलाता है। भद्रबाहुस्वामी ने श्रुत-मद के कारण चौदह पूर्व का भावार्थ और रहस्य स्थूलीभद्र जी को नहीं दिया। श्रुतज्ञान को जीव पचा नहीं पायेगे। आहार के अजीर्ण से ज्ञान का अजीर्ण ज्यादा खतरनाक होगा, ऐसे अजीर्ण से जीवों को तथा शासन को लाभ के बजाय नुकसान ज्यादा होगा। "सावधान बन साधना के पथ पर चलना, मद कहीं साधना को तहसनहस नहीं कर डाले इसहेतु जागृत बनना।

२. सिद्धशीला :- सिद्धशीला, मनुष्यलोक जितनी ही ४५ लाख योजन प्रमाणवाली है, श्वेत छत्र के आकार की है। शुभ्र है, सर्वार्थसिद्ध विमान से १२ योजन उपर है, बीच में आठ योजन मोटी है और किनारे पर मक्खी के पंख से भी अधिक पतली है, उसके एक योजन ऊपर अलोक है, उसके चौवीस में भाग में सिद्ध भगवंतो की स्थिती होती है।

३. रायसी शाह :- जामनगर के रायसी शाह नागडा कल्याणसागर सुरी के अनन्य भक्त थे। रायसी शाह ने श्रीगोडीजी का संघ निकाला, सुखा पडा तब अन्नक्षेत्र खोले, लोगो को जीवनदान दिया। भलसर गाँव मे जिनालय, पौषधशाला बनवाई, राजकोट मे कृष्ण मंदीर और कालवाड मे उपाश्रय बनवाया, मांढा गाम शिखरबंध जिनालय बंधवाकर, पंचधार भोजन श्रीसंघ को कराया। पौषधशाला बनायी। कच्छ मांढा मे जिनालय बनाया, जलके व्याऊ, विश्रामगृह आदि मे बहुत धन खर्च किया। अचलगच्छ के साधार्मिक बंधुओ के प्रत्येक घर मे उन्होने प्रभावना की। ऐसे अनेक सुकृत कार्य किये।

४. अल्प बहुत्व :- किन जीवों की संख्या अल्प, किन जीवों की उनसे कितने अधिक इसकी जानकारी जीवों का अल्प-बहुत्व कहलाती है। संख्या में गिनती शक्य हो वहाँ तक संख्यात शब्द वापरते है। गिनती शक्य न हो वे असंख्यात और इनसे भी सविशेष अधिक अनंत कहलाते है। पर्याप्त मनुष्य- सबसे अल्प है, बादर अग्निकाय असंख्यात गुणा है, भवनपति वैमानिकदेव, नारकी, व्यंतर देव, ज्योतीषीदेव, चउरिंद्रिय जीव, तेइन्द्रिय जीव, पृथ्वीकाय जीव, अपकाय जीव, वायुकाय जीव उससे असंख्यात गुना है। पंचेंद्रिय तिर्यंच व, द्विन्द्रिय जीव उससे विशेषाधिक गुन और वनस्पतीकाय जीव अंनतगुना है।

५. घ्राणेन्द्रिय :- हाथी के गंडस्थल में से मद झरता है इस मद की सुगंध से आकर्षित होकर ही हाथी के मस्तक के पास और आजुबाजु में अनेक भंवरे एकत्रित होते है, गुंजारव करते है, भ्रमरो के गुंजारव से परेशान हो हाथी लगातार कान फडफडाता है, उस के झपटे मे आकर अनेक भ्रमर मरण को पाते है। घ्राणेन्द्रिय की चाहत, मरण की वेदना, हमारे जीव ने इन्द्रीयों की पराधीनता /गुलामी के कारण अनंतबार भोगी है। अज्ञानदशा में इस जीव ने कितनी बार मरण वेदना भोगी है।